उचित पुरस्कार

दो व्यक्ति एक-दूसरे के पड़ोसी हैं, एक व्यक्ति अच्छा और दयालु है, दूसरा कंजूस और लालची.

एक दिन जब अच्छे, दयालु व्यक्ति को एक चिड़िया मिलती है, जिसका पँख टूट गया है. तो तुम्हें क्या लगता है कि क्या हुआ होगा? वह पक्षी की देखभाल करता है. उसे पानी पिलाता है, कीड़े खिलाता है. पक्षी ठीक हो जाता है. स्वस्थ होने के बाद पक्षी कहता है, “जो कुछ तुम ने मेरे लिए किया है उसके लिए मैं तुम्हें उचित पुरस्कार देना चाहता हूँ.” पक्षी उसे एक छोटा बीज देता है. “इसे धरती में बो देना,” पर पक्षी यह नहीं बताता कि क्या होगा.

उस बीज से एक जादुई बेल उगती है जिस पर बड़े-बड़े, मीठे तरबूज़ लगते हैं. उनके भीतर उसका उचित पुरस्कार है.

अब कंजूस, लालची आदमी ईर्षा से जलने लगता है.

फिर क्या होता है, यही इस कहानी में रोचक ढंग से बताया गया है.

उचित पुरस्कार

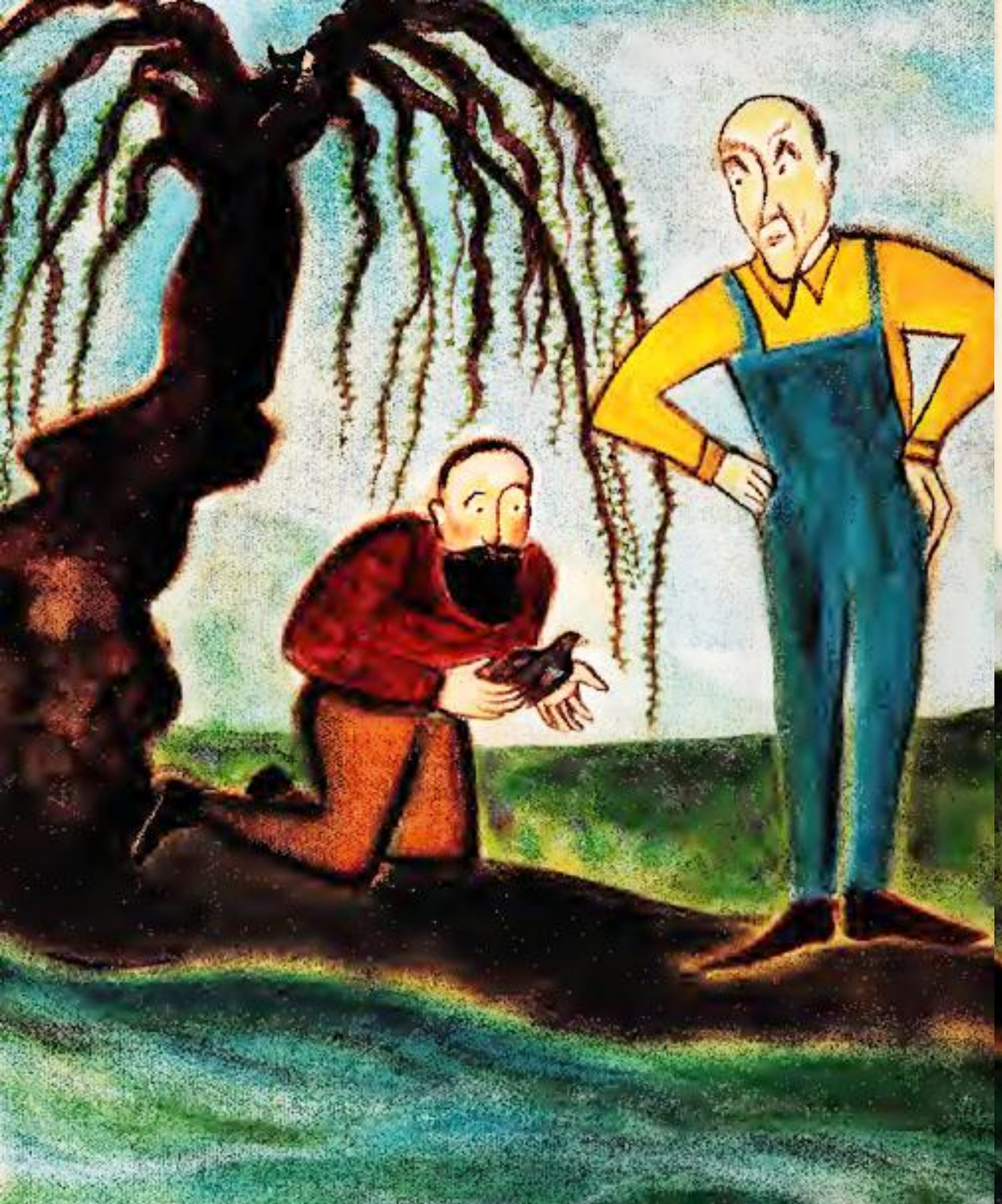

वसंत ऋतु की एक उज्ज्वल सुबह वह दोनों नदी किनारे रास्ते पर टहलते हुए जा रहे थे. वहाँ एक पुराने पेड़ के नीचे एक छोटी चिड़िया उन्हें दिखाई दी, जिसके एक पँख टूटा हुआ था.

अच्छे, दयालु आदमी ने नीचे झुक कर उस पक्षी को उठा लिया. “ओह, बेचारा नन्हा पक्षी,” उसने कोमलता से कहा. “तुम्हारा तो एक पँख टूट गया है.”

“तुम इसके लिए अपना समय क्यों व्यर्थ गंवा रहे हो?” उसके पड़ोसी ने उसका तिरस्कार करते हुए कहा.

“यह पक्षी घायल है. मैं इसे घर ले जाऊँगा और इसको स्वस्थ करने का प्रयास करूँगा.”

“ओह, तुम हमेशा से ही ऐसे मूर्ख रहे हो,” कंजूस, लालची व्यक्ति उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोला.

अच्छे, दयालु आदमी ने पड़ोसी की बात की ओर ध्यान न दिया. वह पक्षी को घर ले आया. हर दिन उसने पक्षी को पानी पिलाया, खाने के लिए कीड़े-मकोड़े ला कर दिये. पक्षी का स्वास्थ्य सुधरता गया, सुधरता गया और एक दिन उसका पँख बिलकुल ठीक हो गया.

फिर वह पक्षी को अपने बगीचे में ले आया, उसे अपनी हथेली पर बैठा लिया और बोला, “नन्हे पक्षी, तुम्हारा पँख ठीक हो गया है. अब तुम उड़ कर अपने घर जा सकते हो.”

पक्षी उस व्यक्ति की ओर घूमा, उसने अपनी चोंच खोली और उससे कहा (उसने वैसे ही बात की जैसे मैं तुम से कर रहा हूँ), “जो कुछ तुम ने मेरे लिए किया है और तुम्हारी उदारता के लिए मैं तुम्हें उचित पुरस्कार देना चाहता हूँ.”

नन्हे पक्षी ने उस आदमी की हथेली पर एक नन्हा बीज रख दिया. “इस बीज को अपने बगीचे में लगा देना और तुम्हें तुम्हारा उचित पुरस्कार मिल जायेगा.”

इतना कह कर पक्षी उड़ कर दूर नीले आकाश में चला गया.

अच्छे, दयालु आदमी ने वह बीज ज़मीन में बो दिया. सारी वसंत ऋतु और ग्रीष्म काल में उसने उसे पानी दिया, ज़मीन की गुड़ाई की और घासपात को उखाड़ निकाला. आखिरकार उस नन्हे बीज से तरबूज़ों की एक विशाल बेल उपजी.

बेल यहाँ-वहाँ घूमती हुई सारे बगीचे में फैल गई. और बड़े-बड़े, गोल-गोल रसीले तरबूज़ उस पर निकल आए.

शरद पूर्णिमा का चाँद जब आकाश में चमक रहा था, किसान अपने तरबूज़ तोड़ने लगा. उसने पहला तरबूज़ बेल से तोड़ा और फटाक! चमकते हुए चाँदी के सिक्के फूट कर बाहर आए.

उसने दूसरा तरबूज़ तोड़ा और फटाक! चमकते हुए सोने के सिक्के फूट कर बाहर आए.

उसने तीसरा तरबूज़ तोड़ा और फटाक! बहुमूल्य चमकते हुए मोती फूट कर बाहर आए.

जितने भी तरबूज़ उसने तोड़े, फटाक! फटाक! फटाक! हीरे, जवाहिर, माणिक बाहर आए. उसने जितनी कल्पना की थी उससे कहीं अधिक धन उसे मिल गया. अब वह एक धनी व्यक्ति था-संसार के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक.

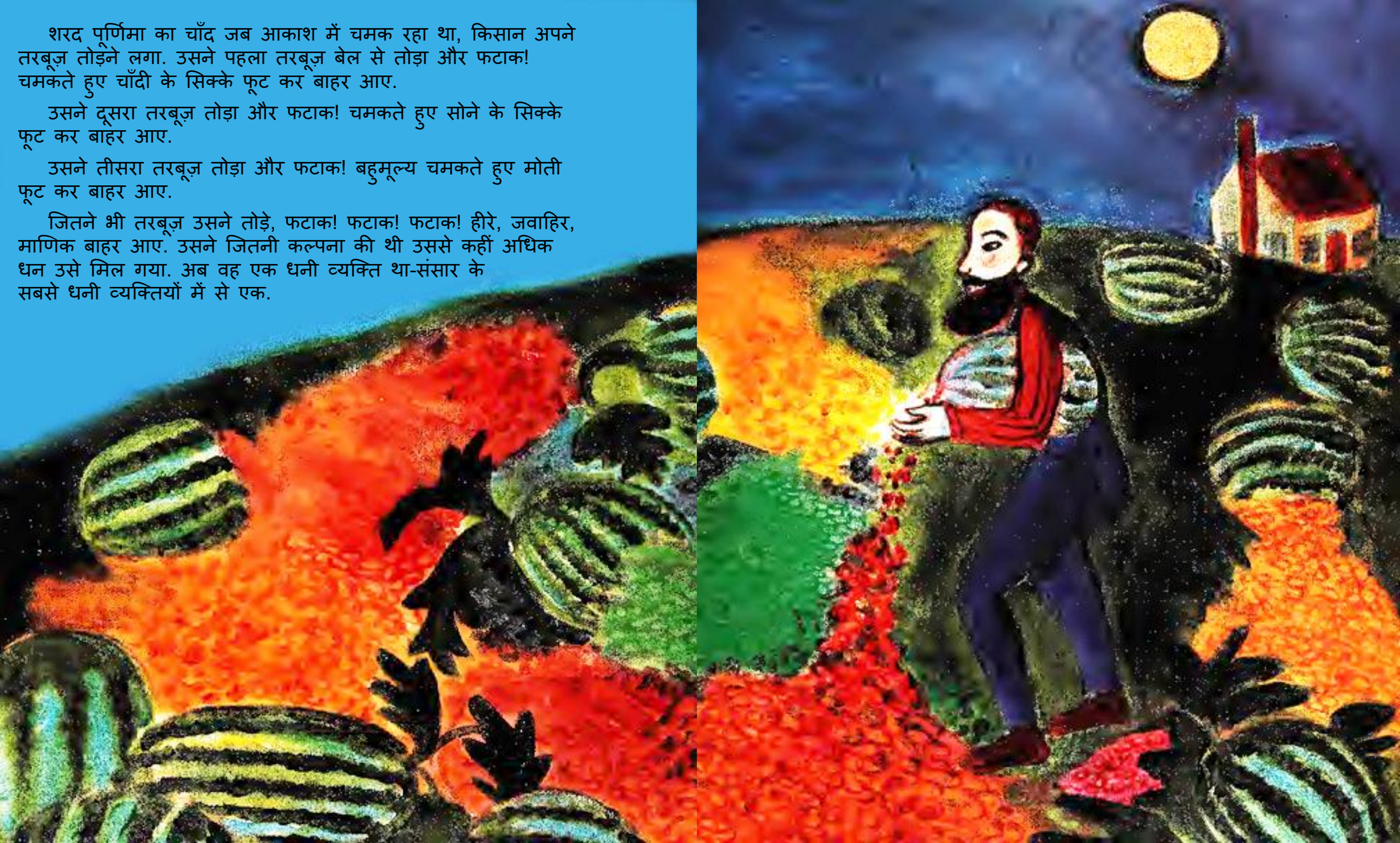

अपने स्वभाव के अनुरूप अच्छा, दयालु आदमी अपने सौभाग्य का समाचार अपने पड़ोसी को बताना चाहता था.

“ओह, यह तो अति उत्तम बात है,” कंजूस, लालची आदमी बड़बड़ाया. “मैं तुम्हारे लिए बहुत प्रसन्न हूँ,” वह मुस्कराया, परंतु उसकी मुस्कराहट दबी-दबी थी.

लेकिन हमें पता है, क्यों पता है न, कि कंजूस, लालची पड़ोसी सच में ऐसा महसूस न कर रहा था. नहीं, वह तो द्वेष और ईर्षा के वशीभूत हो गया था.

मैं क्यों धनी नहीं बन पाया? उसने अपने आप से कहा. *मुझे क्यों अपना पुरस्कार नहीं मिलना चाहिए? मैं जानता हूँ कि मैं क्या करूँगा. मैं भी टूटे हुए पँख वाले एक पक्षी की तलाश करूँगा. मैं उसकी देखभाल करूँगा. और फिर मुझे अपना पुरस्कार मिलेगा.*

कंजूस, लालची आदमी नदी किनारे वाले रास्ते की ओर दौड़ा आया. उस रास्ते पर वह ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे चलने लगा और टूटे हुए पँख वाला पक्षी ढूँढ़ने लगा. लेकिन उसे ऐसा कोई पक्षी न मिला. अगले दिन वह फिर उस रास्ते पर आया और ऊपर-नीचे चला, परंतु उसे कोई पक्षी न मिला.

आखिरकार, तीसरे दिन वह अपना धैर्य खो बैठा. उसने अपनी जेब से एक गुलेल निकाली. व्हाप! एक पेड़ पर बैठी एक चिड़िया को उसने मार गिराया.

वह नीचे झुका और बेदर्दी से उस पक्षी को उठा लिया. “अह, बेचारी चिड़िया,” उसने ऐसे कहा कि जैसे उसे पक्षी की परवाह थी. “कितना बुरा हुआ. तुम्हारा पँख टूट गया. लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं क्या करूँगा. पँख ठीक होने तक मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा.”

“तुम बस इतना निश्चित कर देना कि मुझे मेरा पुरस्कार मिल जाए.”

उस कंजूस, लालची आदमी ने वही किया जो उसने कहा था. वह घायल पक्षी को अपने घर ले आया. हर दिन वह उसके लिए पानी और कीड़े लाता.

और हर दिन वह चिड़िया को याद दिलाता, “जो कुछ मैं तुम्हारे लिए कर रहा हूँ उसे भूलना नहीं और मुझे पुरस्कार देना भी न भूलना.”

जब पक्षी का पँख ठीक हो गया तो किसान उसे अपने बगीचे में ले आया, उसे मज़बूती से पकड़े रखा और कहा, “तो पक्षी अब तुम पूरी तरह स्वस्थ हो गए हो. तुम जा सकते हो. लेकिन जाने से पहले अच्छा होगा कि तुम मुझे मेरा पुरस्कार दे दो.”

पक्षी उस व्यक्ति की ओर घूमा, उसने अपनी चोंच खोली और उससे कहा (उसने वैसे ही बात की जैसे मैं तुम से कर रहा हूँ), “हाँ. जो कुछ तुम ने किया और जैसा व्यवहार तुम ने मेरे साथ किया, उसके लिए मैं चाहता हूँ कि उचित पुरस्कार तुम्हें मिले.”

नन्हे पक्षी ने कंजूस, लालची आदमी की हथेली पर एक नन्हा बीज रख दिया और कहा, “इस बीज को अपने बगीचे में लगा दो और तुम्हें तुम्हारा पुरस्कार मिल जायेगा.” फिर जितनी जल्दी वह उड़ सकता था उतनी जल्दी उड़ कर वह चला गया.

कंजूस, लालची आदमी अपने बगीचे की ओर भागा और उस बीज को ज़मीन में उसने बो दिया. सारी वसंत ऋतु और ग्रीष्म काल में उसने ज़मीन की गुड़ाई की, पानी दिया और घासपात को उखाड़ निकाला. उसने इतनी मेहनत की जितनी सारे जीवन में कभी न की थी. नन्हे बीज से तरबूज़ों की एक विशाल बेल निकली.

लेकिन यह बेल घूमती हुई उसके बगीचे में यहाँ-वहाँ न फैली. नहीं, बेल ज़मीन से निकल कर सीधी आकाश की ओर बढ़ने लगी. और सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि उस पर एक भी तरबूज़ न लगा था.

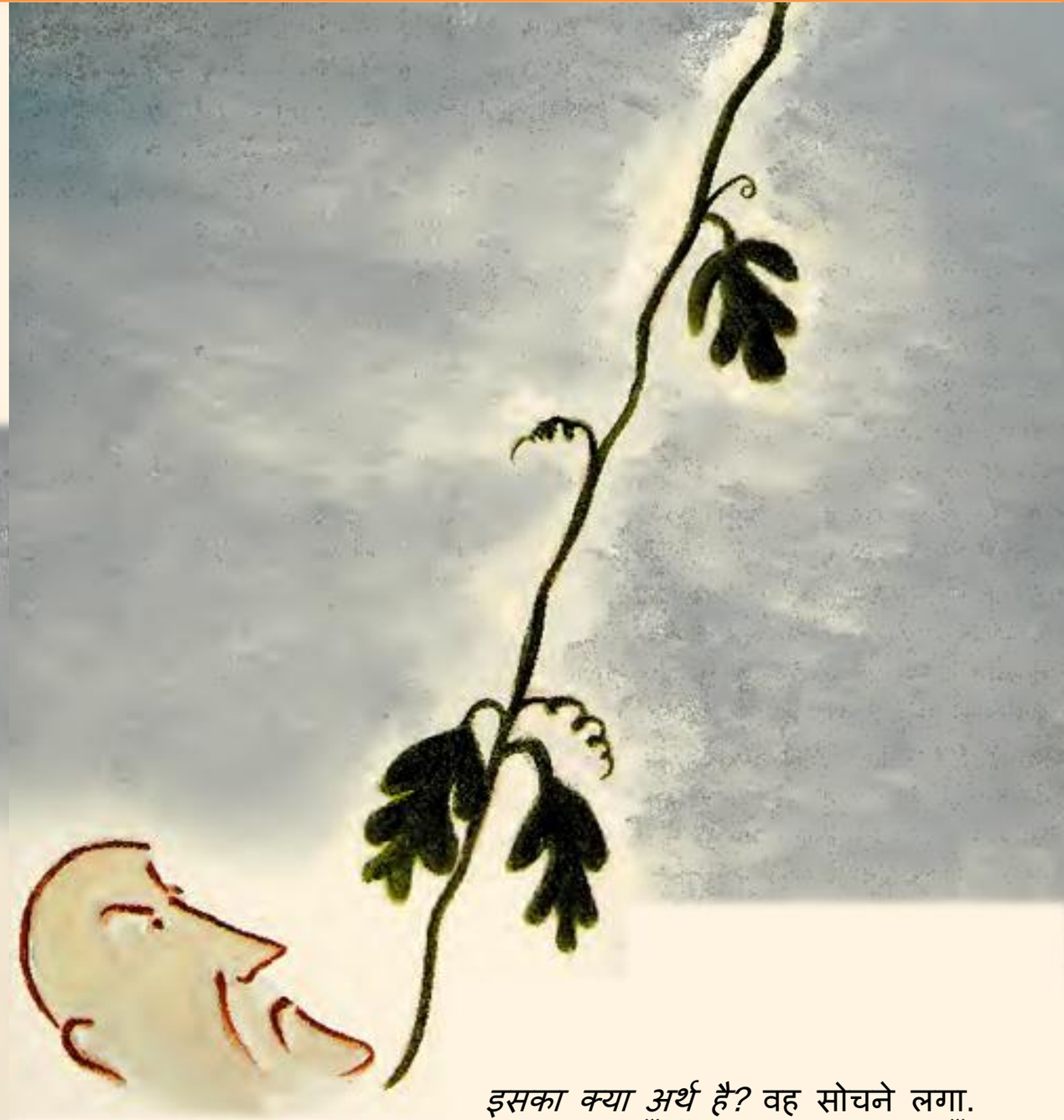

इसका क्या अर्थ है? वह सोचने लगा.
मेरे तरबूज़ कहाँ हैं? मेरा पुरस्कार कहाँ है?

सारे ग्रीष्म काल में वह बेल ऊँची होती गई. ऊँची, और ऊँची, और भी ऊँची और शरद पूर्णिमा की रात आने तक इतनी ऊँची हो गई थी कि वह शीतल, निर्जन चाँद को छूने लगी.

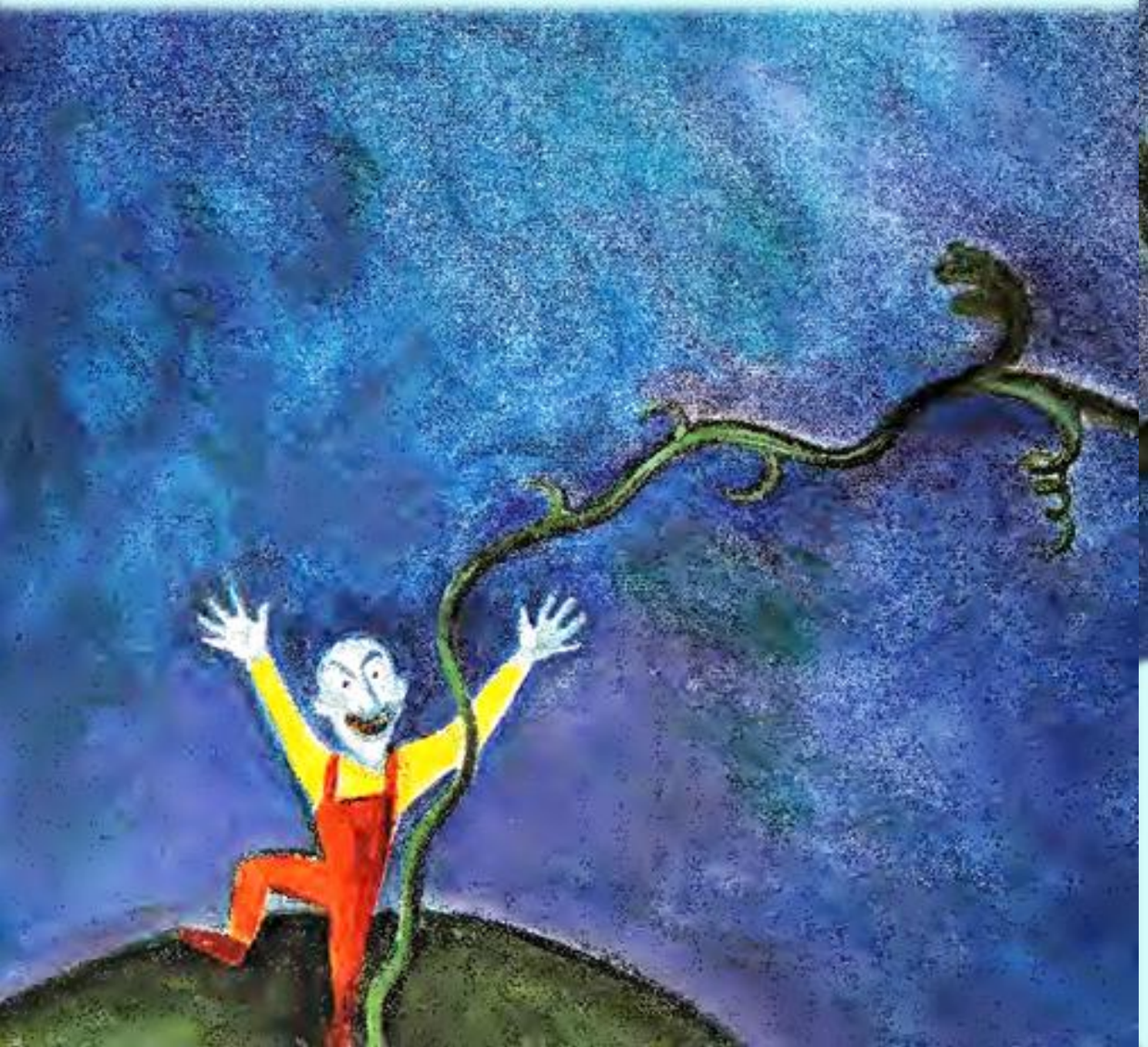

जब कंजूस, लालची व्यक्ति ने यह देखा तो वह चिल्लाया, “अहा! मैं समझ गया. मैं समझ गया. चाँद का सारा धन मेरा है, मेरा है. हा, हा, हा!” वह अपनी छाती थपथपाने लगा. वह खुशी से उछलने लगा. वह चिल्लाने और हँसने लगा. “हा, हा, हा! चाँद की सारा धन मेरा है. मेरा है. मेरा है. मेरा है. मैं धनी हूँ. धनी. धनी. धनी. अपने मूर्ख पड़ोसी से अधिक धनी हूँ.”

फिर वह कूद कर बेल पर चढ़ गया. वह ऊपर चढ़ने लगा और वह चढ़ता गया और वह चढ़ता गया और वह चढ़ता गया और वह चढ़ता गया और उस संपत्ति की कल्पना करता रहा जो शीघ्र ही उसकी होने वाली थी. बहुमूल्य रत्न, सोना, चाँदी. सब मेरा होगा. मेरा होगा. मेरा होगा.

वह ऊपर चढ़ता गया और चढ़ता गया और चढ़ता गया, फिर और ऊपर चढ़ा और आखिरकार वह शीतल, निर्जन चाँद तक पहुँच गया. एक लंबी छलांग लगा कर वह चाँद पर उतर गया और उसी पल वह बेल सूख कर लुप्त हो गई. अब उसके पास चाँद से धरती पर वापस आने का कोई उपाय न था.

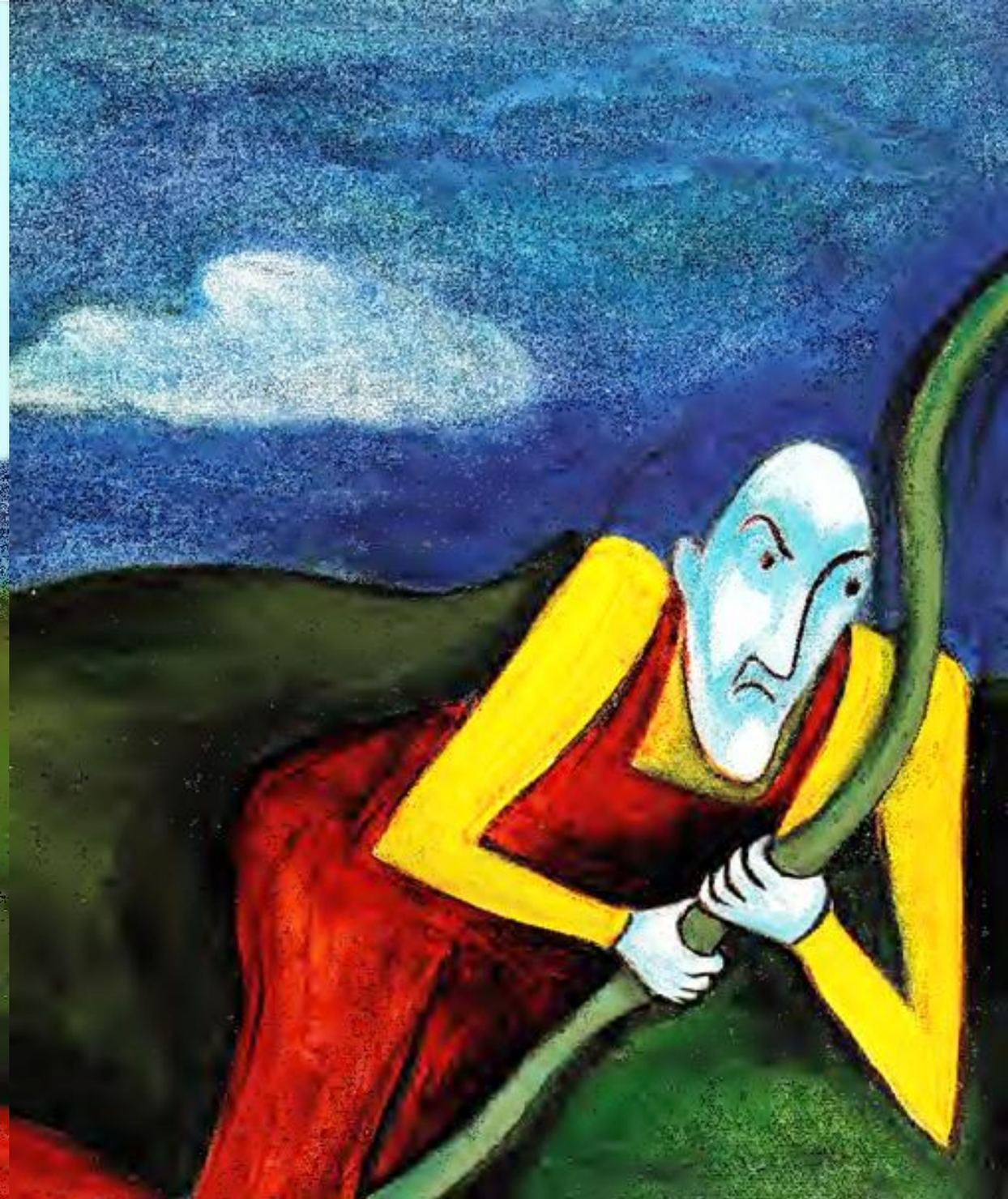

बिन बादल वाली किसी रात में बाहर जाकर अगर तुम ध्यान से देखने का प्रयास करोगे तो संभव है वह कंजूस, लालची आदमी तुम्हें चाँद पर दिखाई दे जाये, क्योंकि.....वह अभी भी वहीं पर है.

समाप्त